

III. बाह्य अर्थव्यवस्था

विश्व अर्थव्यवस्था में देखे गये सुधार के साथ भारत के बाह्य क्षेत्र में और भी सुधार दिखाई पड़ा, जैसाकि निर्यात में बदलाव, पूँजी अंतर्वाह में उछाल तथा देश की विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियों में अतिरिक्त अनुवृद्धि में प्रतिबिंबित होता है। निर्यात के 12 महीनों तक कम रहने के बाद उसमें सुधार दिखाई पड़ा और इसमें नवंबर 2009 और फरवरी 2010 के दौरान औसतन 20.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी। आयात में भी बदलाव आया और दिसंबर 2009-फरवरी 2010 के दौरान इसमें लगभग 43.0 प्रतिशत की औसत वृद्धि का प्रदर्शन हुआ, जो वृद्धि में तगड़े सुधार के प्रभाव को दर्शाता है। अप्रैल-दिसंबर 2009 के दौरान भारत के भुगतान संतुलन की स्थिति, चालू खाता घाटा में संयत वृद्धि के साथ, न्यूनतर व्यापार घाटा के बावजूद, अदृश्य अधिशेषों में गिरावट के कारण अनुकूल बनी रही। पूँजी अंतर्वाह में भी बदलाव दृष्टिगोचर हुआ, जिसकी अगुआई मुख्यतः संविभाग अंतर्वाह ने की, जो भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रफुल्ल वृद्धि संभावनाओं को प्रतिबिंबित करता है। वर्ष 2009-10 के दौरान भारत की विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियों में 27.1 बिलियन अमरीकी डॉलर तक बढ़ोतरी हुई और यह मार्च 2010 के अंत में 279.1 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गयी। 9 अप्रैल 2010 को विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियाँ 280.0 बिलियन अमरीकी डॉलर थी।

III.1 वैश्विक स्थिति में सुधार को प्रतिबिंबित करते हुए भारत के वणिक माल निर्यात में लगातार बारह महीनों तक गिरावट रहने के बाद अक्टूबर 2009 से सुधार परिलक्षित हुआ। आयात में भी दिसंबर 2009 से तगड़ा बदलाव दिखाई पड़ा, जो वृद्धि में सुदृढ़ सुधार से प्रेरित था। भुगतान संतुलन (बीओपी) की स्थिति अप्रैल-दिसंबर 2009 के दौरान अनुकूल बनी रही।

अंतरराष्ट्रीय गतिविधियाँ

III.2 विश्व व्यापार और औद्योगिक उत्पादन में पुनरुत्थान की पृष्ठभूमि में वर्ष 2009 की चौथी तिमाही

के दौरान अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं में तीव्र सुधार का प्रदर्शन होने के साथ अंतरराष्ट्रीय आर्थिक स्थिति में और भी सुधार हुआ। चूँकि वैश्विक मंदी के दौरान उत्पादन में गिरावट की तुलना में औद्योगिक उत्पादन और निर्यात में तीव्र गिरावट आयी थी, अतः औद्योगिक उत्पादन और निर्यात में भी उत्पादन की तुलना में तगड़ा सुधार हुआ। तथापि, वैश्विक सुधार अब बहुविध गतिवाला प्रतीत होता है, जिसकी अगुआई ईएमई ने की है और स्वपोषी सुधार आना अभी बाकी है।

III.3 विविध अर्थव्यवस्थाओं की चौथी तिमाही के आँकड़ों में विशेष रूप से सुधार के पक्के संकेत दिखाई पड़े (चार्ट III.1क और ख)। एशिया वैश्विक सुधार का मुखिया बना हुआ है। आगे बढ़ते हुए, उन्नत और उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं, दोनों, में वर्ष 2010 में तगड़ा

सुधार होने की उम्मीद की जाती है, हालाँकि इसकी गति विभिन्न देशों में भिन्न-भिन्न होगी (सारणी III.1)। सुदृढ़ आर्थिक ढाँचा और द्रुत नीतिगत अनुक्रियाओं ने अनेक उभरती अर्थव्यवस्थाओं को अभूतपूर्व बाह्य आघातों के प्रभाव का शमन करने में मदद की है।

III.4 विश्व व्यापार में लगातार चार तिमाहियों तक गिरावट का रुख रहने के बाद विश्व व्यापार में वृद्धि के रुख में बदलाव आया है (चार्ट III.1ग)। आइएमएफ के नवीनतम मासिक आँकड़ों (अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सांख्यिकी) के अनुसार विश्व निर्यात में जनवरी 2010 में 19.1 प्रतिशत की धनात्मक वृद्धि दिखाई पड़ी। यह विश्व पण्य कीमतों में बढ़ोतरी के अनुरूप था। डब्ल्यूटीओ के आँकड़ों के अनुसार विश्व वणिज्य माल निर्यात में वर्ष 2009 की चौथी तिमाही में (परिणामी तिमाही-दर-

सारणी III 1: चुनिंदा आर्थिक संकेतक - विश्व

मद	2007	2008	2009	2010पी
1	2	3	4	5
I. वैश्विक उत्पादन (प्रतिशत परिवर्तन) #	5.2	3.0	-0.8	3.9
	(3.8)	(1.8)	(-2.1)	(3.0)
i) विकसित अर्थव्यवस्थाएं	2.7	0.5	-3.2	2.1
ii) अन्य उभरते बाजार और विकासशील देश	8.3	6.1	2.1	6.0
जिनमें से : विकासशील एशिया	10.6	7.9	6.5	8.4
भारत	9.4	7.3	5.6	7.7
II. उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति (प्रतिशत)				
i) विकसित अर्थव्यवस्थाएं	2.2	3.4	0.1	1.3
ii) अन्य उभरते बाजार और विकासशील देश	6.4	9.2	5.2	6.2
जिनमें से : विकासशील एशिया	5.4	7.5	3.0	3.4
III. वैश्विक व्यापार @				
i) व्यापार की मात्रा	7.3	2.8	-12.3	5.8
ii) निर्यात की मात्रा	7.4	2.8	-11.4	2.6
iii) व्यापार मूल्य अपस्फीतिकारक	8.1	11.2	-12.2	5.4
IV. चालू खाता शेष (जीडीपी का प्रतिशत)				
i) यूएस	-5.2	-4.9	-2.6	-2.2
ii) चीन	11.0	9.8	7.8	8.6
iii) भारत -	1.0	-2.2	-2.2	-2.5
iv) मध्य - पूर्व	18.1	18.3	2.6	7.9
V. निवल पूँजी अंतर्वाह ## (बिलियन अमरीकी डॉलर)				
i) निजी पूँजी अंतर्वाह	887.8	667.1	435.2	721.6*
ii) आधिकारिक पूँजी अंतर्वाह	38.7	57.2	68.0	55.8*

पी : अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष का अनुमान

: वृद्धि दरें क्रय शक्ति समानता आधारित विनिमय दरों पर हैं। कोष्ठकों के आंकड़े बाजार विनिमय दरों पर वृद्धि दरें हैं।

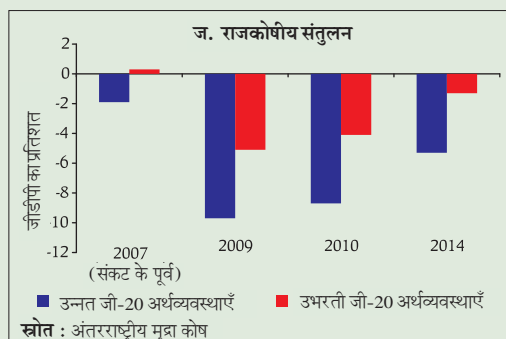
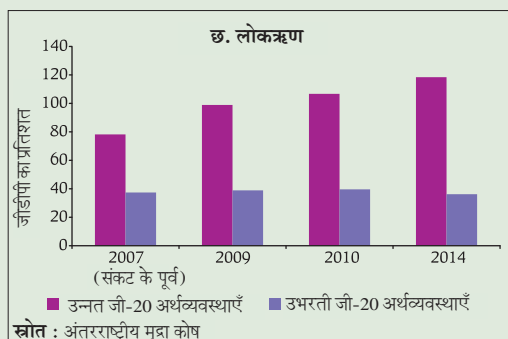
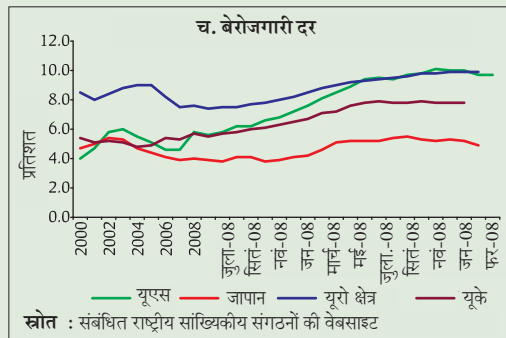
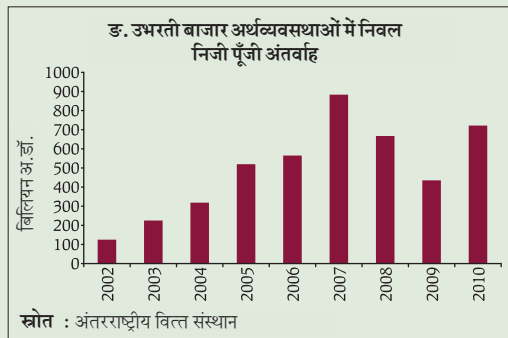
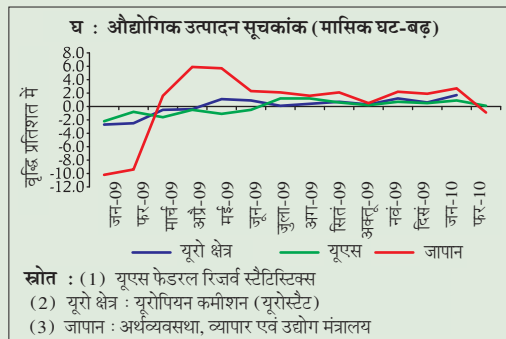
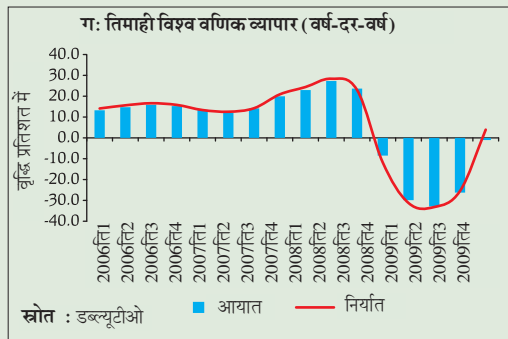
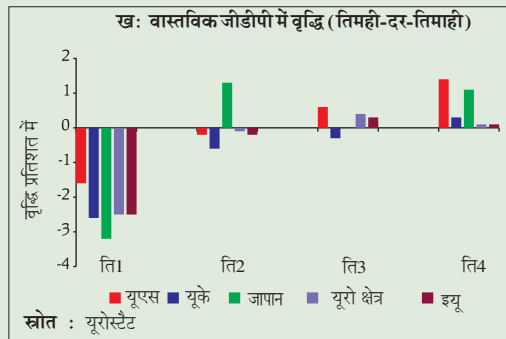
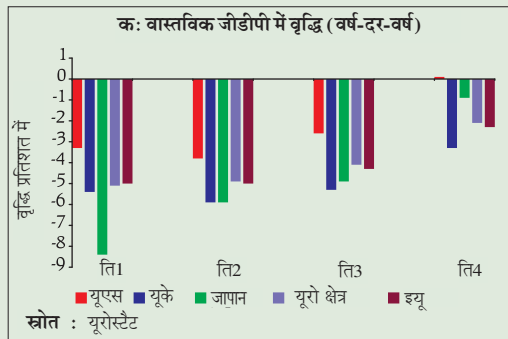
@ : वस्तुओं और सेवाओं के वैश्विक निर्यात और आयात के वार्षिक प्रतिशत परिवर्तन का औसत।

: उभरती अर्थव्यवस्थाओं को निवल पूँजी अंतर्वाह के संबंध में आँकड़ों का स्रोत अंतरराष्ट्रीय वित्त संस्थान (आइआइएफ) है

* : आइआइएफ का पूर्वानुमान

स्रोत : वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक (डब्ल्यूईओ) (अक्टूबर 2009) एवं डब्ल्यूईओ अपडेट जनवरी 2010, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष।

चार्ट III.1: प्रमुख वैश्विक संकेतक



तिमाही) 10.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई, हालाँकि वर्ष-दर-वर्ष आधार पर यह वृद्धि 3.9 प्रतिशत पर कम थी।

III.5 उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में सुधार भी औद्योगिक उत्पादन में हुई वृद्धि (माह-दर-माह) से स्पष्ट था (चार्ट III.1घ)। ईएमई में आये तगड़े सुधार के साथ सहज विश्व चलनिधि स्थिति को देखते हुए ईएमई में पूँजी अंतर्वाह में वर्ष 2010 में पुनरुत्थान होने का पूर्वानुमान किया गया है, हालाँकि यह वैश्विक संकट के पूर्व प्राप्त उच्च स्तर की तुलना में काफी कम रहेगा (चार्ट III.1ड)। अनवरत उच्च बेरोजगारी की स्थिति ने एक रोजगारविहीन सुधार की जोखिम को सामने ला खड़ा किया है, जो निकास के संबंध में देश की रणनीति को प्रभावित करेगा (चार्ट III.1च)। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में उद्दीपन-पश्चात् लोक ऋण का उच्च स्तर और संकट-पूर्व स्तर तक सुधार हो जाने की चुनौतियाँ विश्व अर्थव्यवस्था के लिए संकट के बादवाली स्थिति में स्थायी चिंता का विषय बनी रहेंगी (चार्ट III.1छ एवं ज)।

III.6 वैश्विक वृद्धि दृष्टिकोण में आगे आने वाले पथ पर काफी जोखिमें उपस्थित हैं। निचले स्तर पर प्रमुख जोखिम विभेदक वृद्धि से और विभिन्न देशों में मुद्रास्फीति की स्थिति से उत्पन्न होती है, जिसके चलते संकटकालीन समर्थक नीतियों से निकास के समय-निर्धारण में वैषम्य प्रतीत होता है, जो वैश्विक वृद्धि पैटर्न पर और इसके पुनर्संतुलन पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है और इसके अलावा पूँजी प्रवाह में बदलाव के माध्यम से ईएमई में विनिमय दर तथा आस्ति कीमतों को प्रभावित कर सकता है। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में अपसामान्य वित्तीय प्रणालियाँ/आवास बाजार और बढ़ती बेरोजगारी घरेलू खर्च में सुधार को रोक सकते हैं। वर्तमान संधिकाल में वैश्विक वृद्धि के लिए अन्य प्रमुख जोखिम बढ़ी संपूर्ण जोखिम प्रतीत होती है, जो इस समय यूरोप के कुछ हिस्सों तक ही सीमित है, लेकिन कालक्रम में इसके उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में विस्तारित होने की संभावना है। दूसरी जोखिम है बढ़ती मुद्रास्फीति का खतरा, यदि बड़े पैमाने

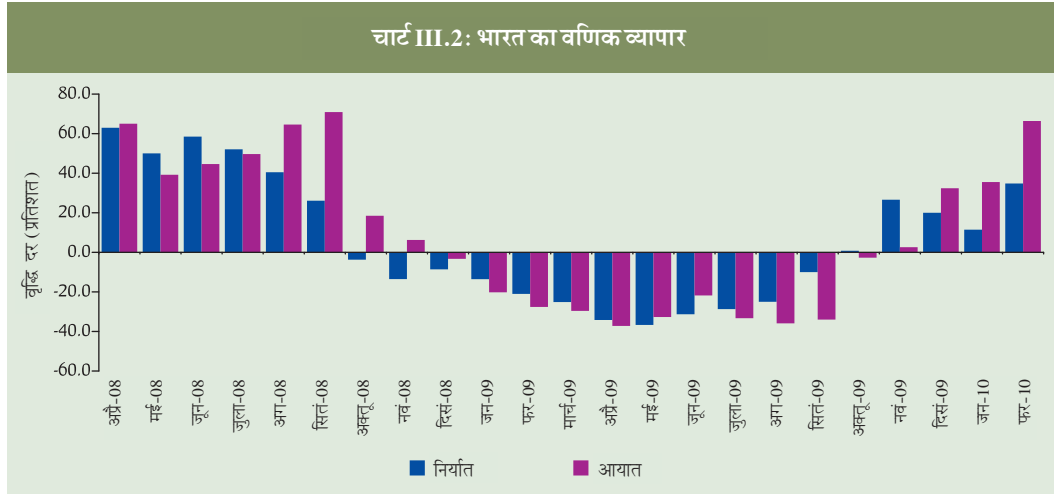
पर राजकोषीय घाटे का मुद्रीकरण किया जाता है। अभी भी यह उम्मीद की जाती है कि न्यून स्तर का क्षमता उपयोग और मुद्रास्फीति को भली-भाँति रोक पाने की प्रत्याशा स्फीतिकारक दबाव को नियंत्रित कर पायेगी। बजट स्थिति के बिगड़ने और राजकोषीय धारणीयता के संबंध में बढ़ती चिंता वित्तीय बाजारों को अस्तव्यस्त कर सकती है और परिवारों तथा कंपनियों के लिए उधार की लागत को बढ़ा कर सुधार की स्थिति में गड़बड़ी पैदा कर सकती है।

III.7 विश्व अर्थव्यवस्था में सुधार का भारत के बाह्य क्षेत्र पर प्रभाव निर्यात में बदलाव तथा पूँजी अंतर्वाह की निरंतरता में दृष्टिगोचर हुआ। वैश्विक संकट की अनुक्रिया के रूप में संरक्षणवाद के बारे में चिंता के बावजूद वर्ष 2010 के लिए विश्व व्यापार में सुधार के संबंध में किया गया पूर्वानुमान भारत के लिए निर्यात संभावनाओं को उन्नत करेगा। सहज वैश्विक चलनिधि स्थितियाँ और भारत की उच्चतर वृद्धि संभावना अब तक पूँजी प्रवाह में देखे गये पुनरुत्थान की गति को तेज करेंगी। विभिन्न देशों में सुधार का वियोजन तथा स्फीतिकारक स्थितियों का बढ़ता अपसरण भारत में भी प्रतिबिंबित हुआ। इससे पता चलता है कि वैश्विक गतिविधियों का भारत पर प्रभाव पड़ना जारी है, सुधार की गति तथा हेडलाइन मुद्रास्फीति, दोनों के संदर्भ में वैषम्य का बड़ा साक्ष्य सामने है।

वणिक माल व्यापार

निर्यात

III.8 वैश्विक संकट के संसर्ग से व्यापार सरणी ने भारत के निर्यात संबंधी कार्यसंपादन को प्रभावित किया, जिसके कारण निर्यात में लगातार बारह महीनों तक गिरावट बनी रही। अक्टूबर 2009 से निर्यात वृद्धि में बदलाव आया (चार्ट III.2)। नवंबर 2009 से फरवरी 2010 के दौरान निर्यात वृद्धि का औसत 20.5 प्रतिशत पर था। निर्यात में वृद्धि के साथ-साथ विश्व पण्य कीमतों में ऊर्ध्वमुखी प्रवृत्ति और विश्व अर्थव्यवस्था में भी सुधार



दिखाई पड़ा। संचयी रूप से, वर्ष 2009-10 (अप्रैल-फरवरी) के दौरान निर्यात में 11.4 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी, जबकि एक वर्ष पहले इसमें 18.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी थी।

III.9 वर्ष 2009-10 (अप्रैल-सितंबर) की अवधि के लिए पण्यवार निर्यात आँकड़ों से प्रकट हुआ कि विनिर्मित वस्तुओं ने इसमें अपना सबसे बड़ा हिस्सा

बनाये रखा (69.4 प्रतिशत), जिसके बाद पेट्रोलियम और प्राथमिक उत्पादों का स्थान आता है। इसके अलावा, इस अवधि के दौरान विनिर्मित वस्तुओं का हिस्सा बढ़ा, जबकि पेट्रोलियम और प्राथमिक उत्पादों के हिस्से में कमी आयी। अप्रैल-सितंबर 2009 के दौरान सभी प्रमुख पण्य समूहों के निर्यात में कमी आयी (सारणी III..2)।

सारणी III.2: प्रमुख पण्यों का निर्यात

वस्तु /समूह	बिलियन अमरीकी डॉलर			घट-बढ़ (प्रतिशत)		
	2008-09 अप्रैल - मार्च	2008-09सं अप्रैल-सितंबर		2008-09 अप्रैल - मार्च	2008-09सं अप्रैल-सितंबर	
		2008-09सं	2009-10अ		2008-09सं	2009-10अ
1	2	3	4	5	6	7
1. प्राथमिक उत्पाद	25.3	14.8	10.5	-8.0	43.0	-29.3
जिसमें से:						
क) कृषि एवं संबद्ध उत्पाद	17.5	10.3	7.2	-4.9	50.8	-30.6
ख) अयस्क और खनिज	7.8	4.5	3.3	-14.5	27.6	-26.5
2. विनिर्मित उत्पाद	123.1	70.6	54.3	19.6	46.4	-23.0
जिसमें से :						
क) रसायन एवं संबद्ध उत्पाद	22.7	12.6	10.2	7.1	31.5	-19.0
ख) इंजीनियरिंग वस्तुएं	47.3	27.1	18.6	26.5	58.1	-31.3
ग) वस्त्र एवं वस्त्र उत्पाद	20.0	10.6	9.3	3.0	13.6	-11.6
घ) रत्न एवं आभूषण	28.0	17.4	13.7	42.1	81.3	-20.9
3. पेट्रोलियम उत्पाद	26.8	18.7	10.7	-5.4	47.4	-43.0
4. कुल निर्यात	185.3	108.9	78.3	13.7	48.1	-28.1
जापान:						
तेल से इतर निर्यात	158.5	90.2	67.6	17.8	48.2	-25.0

सं.: संशोधित अ.: अनंतिम
स्रोत: वाणिज्यिक आसूचना एवं अंक संकलन महानिदेशालय।

III.10 गंतव्य स्थलवार, विकासशील देश और ओईसीडी देश भारत के निर्यात के लिए प्रमुख बाजार थे, जो निर्यात के क्रमशः 37.9 प्रतिशत और 36.6 प्रतिशत हिस्से के लिए जिम्मेवार थे। अन्य प्रमुख गंतव्य स्थल ओपेक था, जिसका हिस्सा भारत के निर्यात में 23.3 प्रतिशत था। देशवार दृष्टि से यूएई (14.1 प्रतिशत हिस्से के साथ) भारत के कुल निर्यात का सबसे बड़ा गंतव्य स्थल था, जिसके बाद अमरीका, सिंगापुर, हांगकांग और यूके का स्थान आता है। इस अवधि के दौरान सभी प्रमुख निर्यात गंतव्य स्थलों को किये गये निर्यात में गिरावट आयी।

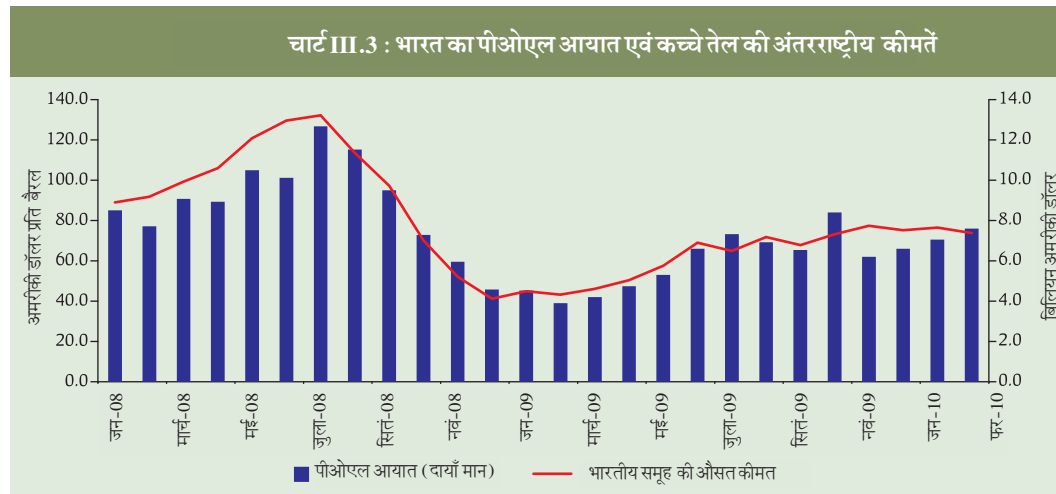
आयात

III.11 भारत के आयात में, जिसमें दिसंबर 2008 से ग्यारह महीनों तक गिरावट जारी रही, नवंबर 2009 में प्रवृत्ति में प्रत्यावर्तन दिखाई पड़ा, जब इसमें 2.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई। आयात में ऊर्ध्वमुखी प्रवृत्ति फरवरी 2010 तक जारी रही। दिसंबर 2009 और फरवरी 2010 के बीच आयात वृद्धि का औसत 43.0 प्रतिशत पर था। संचयी रूप से, वर्ष 2009-10 (अप्रैल-फरवरी) के दौरान आयात में 13.5 प्रतिशत की गिरावट आयी, जबकि एक वर्ष पहले इसमें 25.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी, जो इस अवधि के दौरान अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल की

कम कीमतों और घरेलू आर्थिक कार्यकलाप में मंदी का परिणाम थी। तेल की कीमतों के बढ़ने और आर्थिक सुधार के फलस्वरूप तेल आयात के उच्च परिमाण को प्रतिबिंबित करते हुए तेल का आयात इस अवधि में बढ़ गया (चार्ट III.3)।

III.12 अप्रैल-सितंबर 2009 के दौरान पण्यवार आयात में, गैर-पीओएल आयात में गिरावट आयी, जिसका मुख्य कारण था पूँजीगत वस्तुओं, सोना, चाँदी, मोती, मूल्यवान और कम मूल्यवान रत्नों, रसायन, लोहा और इस्पात के आयात में तेज गिरावट का होना। तथापि, खाद्य तेलों और दालों के आयात में काफी वृद्धि देखी गयी, जो घरेलू आपूर्ति बाधाओं और उच्च कीमतों को प्रतिबिंबित करती है (सारणी III.3)।

III.13 स्रोतवार दृष्टि से, अप्रैल-सितंबर 2009 के दौरान भारत के आयात में सबसे बड़ा हिस्सा विकासशील देशों का था (33.6 प्रतिशत), जिसके बाद ओईसीडी (32.7 प्रतिशत) और ओपेक देशों (30.7 प्रतिशत) का स्थान है। देशवार दृष्टि से चीन आयात का एकल सबसे बड़ा स्रोत बना रहा, जिसका भारत के कुल आयात में 12.0 प्रतिशत हिस्सा था, जिसके बाद अमरीका, यूएई, सऊदी अरब, आस्ट्रेलिया और ईरान का स्थान है।



सारणी III.3: प्रमुख वस्तुओं का आयात						
वस्तु/ समूह	बिलियन अमरीकी डॉलर			घट-बढ़ (प्रतिशत)		
	2008-09	2008-09सं	2009-10अ	2008-09	2008-09सं	2009-10अ
	अप्रैल - मार्च	अप्रैल-सितंबर		अप्रैल - मार्च	अप्रैल-सितंबर	
1	2	3	4	5	6	7
पेट्रोलियम, पेट्रोलियम उत्पाद और संबंधित सामग्री	91.3	63.3	37.4	14.6	83.0	-40.8
खाद्य तेल	3.4	1.5	2.4	34.4	4.7	67.4
लोहा और इस्पात	9.5	5.1	3.9	8.9	14.5	-24.3
पूँजीगत वस्तुएं	71.6	39.0	29.2	2.2	53.7	-25.0
मोती, मूल्यवान और कम मूल्यवान रत्न	16.6	10.5	5.5	107.6	122.2	-47.7
रसायन	12.2	7.6	5.6	23.1	61.4	-26.3
सोना और चांदी	21.8	15.4	11.6	22.3	32.3	-24.6
कुल आयात	303.7	185.0	124.6	20.8	55.1	-32.6
<i>जापन:</i>						
तेल से इतर आयात	212.4	121.7	87.2	23.6	43.8	-28.4
सोना और चांदी को छोड़कर तेल से इतर आयात	190.5	106.3	75.5	23.8	45.6	-28.9
मुख्यतः औद्योगिक निविष्टियाँ*	169.3	94.9	67.3	20.2	40.4	-29.1
सं.: संशोधित अ.: अनंतिम						
*: तेल से इतर आयात सोने और चांदी, थोक उपभोक्ता वस्तुओं, विनिर्मित उर्वरक और प्रोफेशनल औजारों के आयात को घटाकर है।						
स्रोत: वाणिज्यिक आसूचना एवं अंक संकलन महानिदेशालय।						

III.14 वर्ष 2009-10 (अप्रैल-फरवरी) के दौरान 95.7 बिलियन अमरीकी डॉलर पर वणिक माल व्यापार घाटा वर्ष 2008-09 (अप्रैल-फरवरी) के दौरान प्राप्त

स्तर से 16.6 प्रतिशत कम था, जो निर्यात की तुलना में आयात में आपेक्षिक रूप से बड़ी गिरावट को प्रतिबिंबित करता है (सारणी III.4)।

सारणी III.4: भारत का वणिक माल व्यापार						
(बिलियन अमरीकी डॉलर)						
मद	अप्रैल-मार्च		अप्रैल-फरवरी			
	2008-09सं.		2008-09 सं.		2009-10 अ	
	राशि	वृद्धि (%)	राशि	वृद्धि (%)	राशि	वृद्धि (%)
1	2	3	4	5	6	7
निर्यात	185.3	13.7	172.4	18.2	152.7	-11.4
तेल	26.8	-5.4	25.4	4.4
तेल से इतर	158.5	17.8	147.0	20.9
आयात	303.7	20.8	287.1	25.9	248.4	-13.5
तेल	91.3	14.6	89.5	26.6	73.2	-18.2
तेल से इतर	212.4	23.6	197.6	25.6	175.2	-11.4
व्यापार संतुलन	-118.4	33.7	-114.7	39.6	-95.7	-16.6
तेल से इतर वस्तुओं का व्यापार संतुलन	-53.9	44.8	-50.6	41.4
सं.: संशोधित अ.: अनंतिम .: उपलब्ध नहीं						
स्रोत: वाणिज्यिक आसूचना एवं अंक संकलन महानिदेशालय।						

भुगतान संतुलन (बीओपी)

चालू खाता

III.15 वैश्विक आर्थिक सुधार का प्रभाव भारत के भुगतान संतुलन के विभिन्न खातों पर परिलक्षित हुआ। चालू खाता की स्थिति में वर्ष 2009-10 की तीसरी तिमाही में निर्यात और आयात, दोनों में बदलाव दिखाई पड़ा। भारत के वणिज्य माल निर्यात (बीओपी आधार पर) में वर्ष 2009-10 की तीसरी तिमाही में तगड़ी वृद्धि दर्ज की गयी, जबकि वर्ष 2008-09 की तदनुकूल अवधि में इसमें गिरावट दर्ज की गयी थी। आयात (बीओपी आधार पर) में तिमाही के दौरान थोड़ी वृद्धि हुई, जबकि पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि में इसमें उच्च वृद्धि दर्ज की गयी थी। वर्ष 2009-10 की तीसरी तिमाही के दौरान व्यापार घाटा उसकी पूर्ववर्ती तिमाही

और एक वर्ष पहले की तदनुकूल तिमाही की तुलना में कम हुआ। अप्रैल-दिसंबर 2009 के दौरान भी व्यापार घाटा (89.5 बिलियन अमरीकी डॉलर) पूर्ववर्ती वर्ष की तदनुकूल अवधि की तुलना में (98.4 बिलियन अमरीकी डॉलर) कम हुआ, जिसकी अगुआई तेल और गैर-तेल आयात, दोनों में गिरावट ने की (सारणी III.5)।

अदृश्य मदें

III.16 पिछले कुछ वर्षों में अदृश्य प्राप्तियों और भुगतानों में देखी गयी तगड़ी वृद्धि वर्ष 2009-10 के दौरान प्रत्यावर्तित हो गयी, जो उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में मंदी के विलंबित प्रभाव को प्रतिबिंबित करती है। यह गिरावट उपादान और गैर-उपादान, दोनों घटकों में देखी गयी। हालाँकि सॉफ्टवेयर निर्यात में बदलाव देखा गया,

सारणी III.5: भारत का भुगतान संतुलन

	(बिलियन अम.डॉ.)								
	2008-09 आंसं.		2008-09		2009-10			2008-09	2009-10
	अप्रैल-मार्च	अप्रैल-जून आंसं.	जुला-सितं आंसं.	अक्तू-दिसं. आंसं.	अप्रैल-जून आंसं.	जुला-सितं आंसं.	अक्तू-दिसं. प्रा.	अप्रैल-दिसं. आंसं.	अप्रैल-दिसं. प्रा.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1. निर्यात	189.0	57.5	53.6	39.4	37.9	41.9	44.6	150.5	124.5
2. आयात	307.7	82.7	92.8	73.5	64.8	73.8	75.4	249.0	214.0
3. व्यापार संतुलन (1-2)	-118.7	-25.3	-39.1	-34.0	-26.9	-31.9	-30.7	-98.4	-89.5
4. निवल अदृश्य मदें	89.9	22.0	26.5	22.4	20.5	20.0	18.7	70.9	59.2
5. चालू खाता शेष (3+4)	-28.7	-3.3	-12.6	-11.7	-6.4	-11.9	-12.0	-27.5	-30.3
6. सकल पूंजी अंतर्वाह	312.4	94.4	90.0	68.7	77.9	97.7	81.5	253.1	257.1
7. सकल पूंजी बहिर्वाह	305.2	89.5	82.9	74.8	72.0	75.1	66.8	247.2	213.9
8. निवल पूंजी खाता (6-7)	7.2	4.9	7.1	-6.1	5.9	22.6	14.7	5.8	43.2
9. समग्र शेष(5+8)#	-20.1	2.2	-4.7	-17.9	0.1	9.4	1.8	-20.4	11.3
ज्ञापन:									
i. निर्यात वृद्धि (%)	13.7	57.0	39.6	-8.4	-34.0	-21.8	13.2	27.5	-17.3
ii. आयात वृद्धि (%)	19.4	46.8	54.8	9.2	-21.7	-20.4	2.6	35.6	-14.0
iii. व्यापार शेष (जीडीपी के % के रूप में)	-9.8								
iii. अदृश्य प्राप्तियों में वृद्धि (%)	9.8	31.8	33.1	5.4	-6.3	-13.0	-3.1	22.2	-7.7
iv. अदृश्य भुगतानों में वृद्धि (%)	0.6	18.5	12.0	2.4	-5.8	3.3	12.9	10.4	3.7
vi. सीएडी, जीडीपी के % के रूप में	2.4								
vii. विदेशी मुद्रा भंडार (अवधि के अंत में)	252.0	312.1	286.3	256.0	265.1	281.3	283.5	256.0	283.5
#: समग्र शेष में मद सं. 5 और 8 के अलावा भूल-चूक शामिल है									
आंसं.: आंशिक संशोधन प्रा.: प्रारंभिक									

फिर भी गैर-सॉफ्टवेयर निर्यात में गिरावट, जो वैश्विक आर्थिक मंदी का दर्पण था, का परिणाम तिमाही के दौरान समग्र सेवा निर्यात में गिरावट में हुआ। तिमाही के दौरान निवेश आय प्राप्तियों में गिरावट का मुख्य कारण था उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में न्यून ब्याज दर का जारी रहना। तथापि, तिमाही के दौरान निजी अंतरण प्राप्तियों की स्थिति सुदृढ़ बनी रही। तिमाही के दौरान अदृश्य भुगतान में वर्ष 2008-09 की तदनुकूल अवधि की तुलना में उच्च वृद्धि दर्ज की गयी। समग्रतः, तिमाही के दौरान निवल अदृश्य मदें (अर्थात्, अदृश्य प्राप्तियाँ घटाव अदृश्य भुगतान) पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि की तुलना में न्यून थी (सारणी III.6)।

सारणी III.6: अदृश्य मदों से सकल प्राप्तियां और भुगतान				
(बिलियन अमरीकी डॉलर)				
मद	अदृश्य मदों से संबंधित प्राप्तियां		अदृश्य मदों से संबंधित भुगतान	
	अप्रैल-दिसंबर			
	2008-09 आंसं.	2009-10 प्रा.	2008-09 आंसं.	2009-10 प्रा.
1	2	3	4	5
1. यात्रा	8.2	7.9	6.8	6.6
2. परिवहन	8.4	8.0	10.3	8.4
3. बीमा	1.1	1.2	0.8	1.0
4. अन्यत्र शामिल न की गई सरकार	0.3	0.3	0.4	0.4
5. विविध	60.0	47.7	20.6	24.2
जिसमें से				
सॉफ्टवेयर	35.5	34.9	2.4	1.2
सॉफ्टवेयर से इतर	24.5	12.8	18.2	23.1
6. अंतरण	37.6	41.2	2.3	1.7
जिसमें से				
निजी अंतरण	37.1	40.8	2.0	1.3
7. आय	10.9	10.3	14.2	15.3
निवेश आय	10.3	9.6	13.2	14.1
कर्मचारियों को क्षतिपूर्ति	0.6	0.7	1.0	1.2
कुल (1 से 7)	126.4	116.7	55.5	57.5
प्रा. प्रारंभिक	आंसं: आंशिक संशोधन			

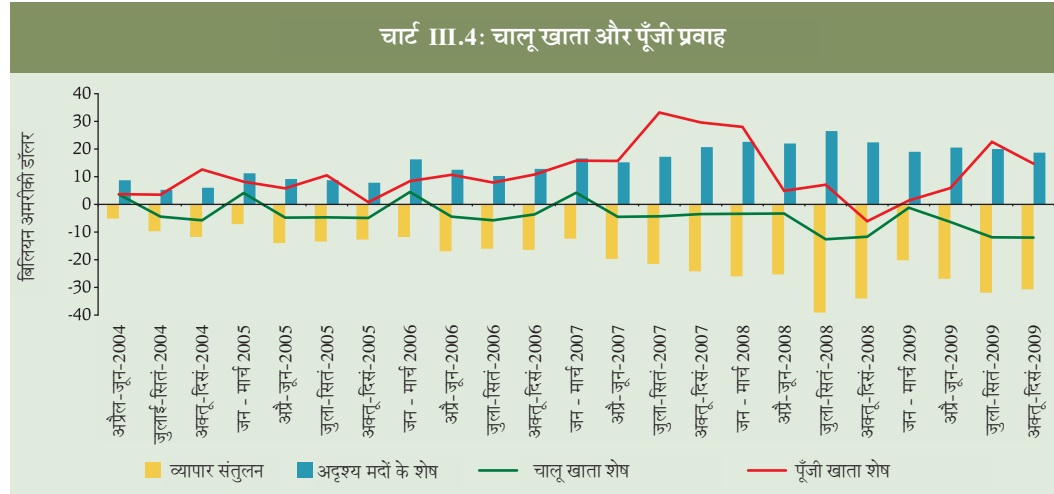
III.17 अप्रैल-दिसंबर 2009 के दौरान अदृश्य प्राप्तियों (निजी अंतरण प्राप्तियों को छोड़ कर) में गिरावट दर्ज की गयी, जबकि अदृश्य भुगतानों में पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि से सीमांतिक वृद्धि दर्ज की गयी। अप्रैल-दिसंबर 2009 के दौरान भारत का निवल सेवा निर्यात 36.9 प्रतिशत तक कम हुआ, जबकि पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि के दौरान वह 30.9 प्रतिशत बढ़ा था, जिसका मुख्य कारण रहा सेवा-प्राप्तियों में कमी होने के साथ सेवा-भुगतानों में बढ़ोतरी होना। जबकि सेवा-प्राप्तियों में गिरावट का कारण सेवा के लगभग सभी घटकों में गिरावट का आना था, सेवा-भुगतान में बढ़ोतरी मुख्यतः व्यापारिक और वित्तीय सेवाओं से प्रेरित थी। इसके फलस्वरूप अप्रैल-दिसंबर 2009 के दौरान निवल अदृश्य मदें पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि की तुलना में न्यून स्तर पर थीं। इस स्तर पर अदृश्य अधिशेषों ने अप्रैल-दिसंबर 2009 के दौरान व्यापार घाटे के 66.1 प्रतिशत का वित्तपोषण किया, जबकि इसने अप्रैल-दिसंबर 2008 के दौरान 72.1 प्रतिशत व्यापार घाटे का वित्तपोषण किया था। न्यून व्यापार घाटा होने के बावजूद, अदृश्य अधिशेष में गिरावट ने वर्ष 2009-10 की तीसरी तिमाही में सीमांतिक रूप से उच्चतर चालू खाता घाटा की अगुआई की (चार्ट III.4)। अप्रैल-दिसंबर 2009 के दौरान 30.3 बिलियन अमरीकी डॉलर पर चालू खाता घाटा अप्रैल-दिसंबर 2008 के दौरान 27.5 बिलियन अमरीकी डॉलर से थोड़ा अधिक था। वर्ष 2008-09 के दौरान जीडीपी के प्रतिशत के रूप में चालू खाता घाटा 2.4 प्रतिशत पर उच्च था, जबकि एक वर्ष पूर्व यह 1.3 प्रतिशत था।

पूँजीगत लेखा

III.18 वर्ष 2009-10 की तीसरी तिमाही के दौरान पूँजी प्रवाह की गति उत्साहवर्धक बनी रही, जिसकी अगुआई मुख्यतः विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, संविभाग निवेश और अल्पावधि व्यापारिक ऋण के अंतर्गत बड़े पूँजी अंतर्वाह ने की (चार्ट III.4 और सारणी III.7)।

मौद्रिक नीति वक्तव्य
2010-11

2009-10 में समष्टि
आर्थिक और मौद्रिक
गतिविधियां



III.19 पूँजीगत लेखा के कुछ संकेतकों के संबंध में नवीनतम उपलब्ध जानकारी से यह संकेत प्राप्त होता है कि पूँजी अंतर्वाह में पुनरुत्थान, जो वर्ष 2009-10 के आरंभ में शुरू हुआ था, और जिसमें दूसरी और तीसरी तिमाहियों में तेजी आयी थी, अंतिम तिमाही में भी

उत्साहजनक बना हुआ है (सारणी III.8)। विश्व अर्थव्यवस्था में सुधार आने के पहले ही वर्ष 2009-10 में तगड़ा सुधार होने के साथ भारत की वृद्धि संभावनाओं के प्रति वैश्विक निवेशकों के सकारात्मक रुझान के कारक हैं, जो वर्ष के दौरान निरंतर पूँजी अंतर्वाह की गति में अंतर्निहित हैं।

सारणी III.7: निवल पूँजी प्रवाह

(बिलि.अम.डॉ.)

मद	2007-08	2008-09	2008-09		2009-10		2008-09	2009-10		
	अप्रैल-मार्च सं.	अप्रै-मार्च आसं.	अप्रै-जून आसं.	जुला-सितं. आसं.	अक्टू-दिसं. आसं.	अप्रै-जून आसं.	जुला-सितं. आसं.	अक्टू-दिसं. प्रा.	अप्रै-दिसं. प्रा.	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1. विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) आक	15.9	17.5	9.0	4.9	0.5	6.1	6.5	3.9	14.3	16.5
जाक	34.7	35.0	11.9	8.8	6.3	8.7	10.7	7.1	27.0	26.6
2. संविभागीय निवेश	18.8	17.5	2.9	3.9	5.9	2.6	4.2	3.2	12.7	10.0
जिसमें से:	27.4	-14.0	-4.2	-1.3	-5.8	8.3	9.7	5.7	-11.3	23.6
विदेशी संस्थागत निवेशक	20.3	-15.0	-5.2	-1.4	-5.8	8.2	7.0	5.3	-12.4	20.5
एडीआर / जीडीआर	6.6	1.2	1.0	0.1	-	0.04	2.7	0.4	1.1	3.2
3. बाह्य सहायता	2.1	2.6	0.4	0.5	1.0	0.1	0.5	0.6	1.9	1.2
4. बाह्य वाणिज्यिक उधार	22.6	7.9	1.5	1.7	3.8	-0.5	1.2	1.5	6.9	2.3
5. अनिवासी भारतीयों की जमाराशियां	0.2	4.3	0.8	0.3	1.0	1.8	1.0	0.6	2.1	3.5
6. अनिवासी भारतीयों की जमाराशियों को छोड़कर बैंकिंग पूँजी	11.6	-7.5	1.9	2.0	-6.0	-5.2	3.4	1.3	-2.1	-0.5
7. अल्पावधि व्यापार ऋण	15.9	-1.9	4.5	0.4	-4.2	-1.5	0.8	3.3	0.7	2.7
8. रुपया ऋण चुकौती	-0.1	-0.1	-0.03	-	-	-0.02	-	-	-0.03	-0.02
9. अन्य पूँजी	11.0	-1.5	-8.9	-1.4	3.7	-3.2	-0.6	-2.2	-6.6	-6.1
कुल (1 से 9)	106.6	7.2	4.9	7.1	-6.1	5.9	22.6	14.7	5.8	43.2

प्रा: प्रारंभिक आसं: आंशिक संशोधन सं: संशोधित

सारणी III.8: 2009-10 में अब तक पूँजी प्रवाह (बिलियन अमरीकी डॉलर)			
घटक	अवधि	2008-09	2009-10
1	2	3	4
भारत को एफडीआइ	अप्रै.-फर.	31.3	33.1
एफआईआइ (निवल)	अप्रै.-मार्च	-15.0	29.0
एडीआर / जीडीआर	अप्रै.-मार्च	1.2	3.3
ईसीबी अनुमोदन	अप्रै.-मार्च	17.2	21.7
एनआरआइ जमाराशियां (निवल)	अप्रै.-फर.	2.9	3.0

एफडीआइ: विदेशी प्रत्यक्ष निवेश
एफआईआइ: विदेशी संस्थागत निवेशक
ईसीबी: बाह्य वाणिज्यिक उधार
एनआरआइ: अनिवासी भारतीय
एडीआर: अमेरिकन डिपॉजिटरी रिसीट
जीडीआर: ग्लोबल डिपॉजिटरी रिसीट

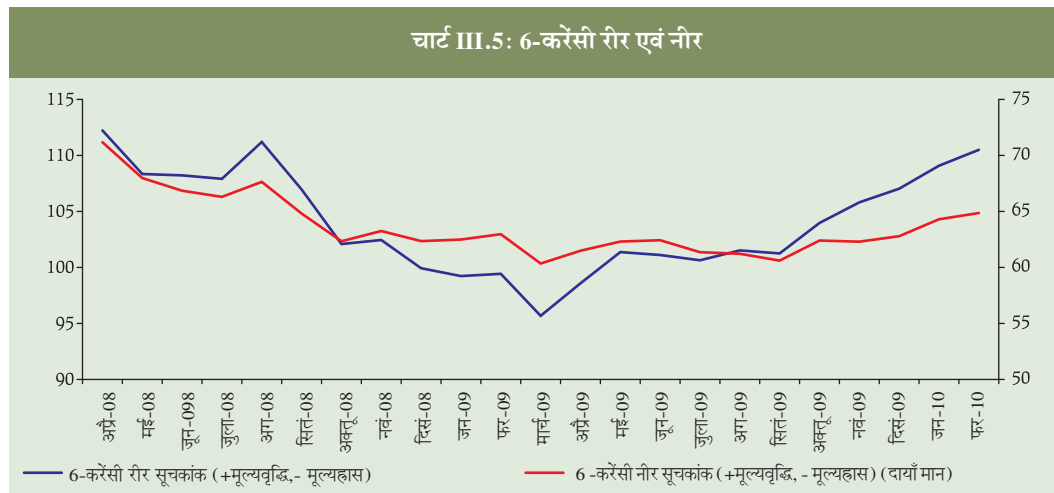
III.20 आगे बढ़ते हुए, वर्ष 2010-11 के दौरान भारत में पूँजी अंतर्वाह के और भी अधिक होने की उम्मीद है, जो पुश एवं पुल, दोनों प्रकार के कारकों द्वारा चालित होगा। जबकि पूँजी अंतर्वाह में उछाल के लिए पुश कारकों में न्यून ब्याज दर सहित अतिरिक्त वैश्विक चलनिधि शामिल है, जिसके कारण अधिक आय की खोज संभव हुई, पुल कारकों में शामिल हैं उत्साहवर्धक वृद्धि संभावनाएँ, अनुकूल ब्याज दर विभेदक और 3जी स्पेक्ट्रम के लिए इसीबी मानदंडों को शिथिल किया जाना। तथापि, उच्चतर स्तर पर प्रत्याशित पूँजी अंतर्वाह से आस्तिकीमतों और विनिमय दर पर दबाव पड़ सकता है।

III.21 वर्ष के दौरान अमरीकी डॉलर के विरुद्ध रुपये का अधिमूल्यन किये जाने और भारत एवं इसके व्यापारिक भागीदारों के बीच मुद्रास्फीति विभेदकों में वृद्धि के चलते वास्तविक विनिमय दर का अधिमूल्यन हुआ (चार्ट III.5 और सारणी III.9)।

विदेशी मुद्रा भंडार

III.22 भुगतान संतुलन आधार पर (अर्थात्, मूल्यन प्रभावों को छोड़ कर) विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियाँ अप्रैल-दिसंबर 2009 के दौरान 11.3 बिलियन अमरीकी डॉलर तक बढ़ीं, जबकि अप्रैल-दिसंबर 2008 के दौरान इनमें 20.4 बिलियन अमरीकी डॉलर की कमी आयी थी। मूल्यन लाभ, जो प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुद्राओं के विरुद्ध अमरीकी डॉलर के मूल्यहास को प्रतिबिंबित करता था, अप्रैल-दिसंबर 2009 के दौरान 20.2 बिलियन अमरीकी डॉलर के लिए जिम्मेवार था, जबकि अप्रैल-दिसंबर 2008 के दौरान 33.4 बिलियन अमरीकी डॉलर की मूल्यन हानि हुई थी। तदनुसार अप्रैल-दिसंबर 2009 के दौरान मूल्यन लाभ विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियों में सकल वृद्धि के कुल 64.1 प्रतिशत के लिए जिम्मेवार है।

III.23 वर्ष 2009-10 के दौरान भारत की विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियाँ 27.1 बिलियन अमरीकी डॉलर तक बढ़ कर मार्च 2010 के अंत तक 279.1 बिलियन अमरीकी



**सारणी III.9: भारतीय रुपये की सांकेतिक
और वास्तविक विनिमय दर
(व्यापार आधारित भारांक, आधार : 1993-94)**

(प्रतिशत मूल्यवृद्धि + /मूल्यहास -)

	2007-08	2008-09 (अ.)	2008-09 (अप्रै.- फर.)	2009-10 (अप्रै.- फर.)
1	2	3	4	5
36-करेंसी रीर	6.4	-10.0	-11.1	9.8
36-करेंसी नीर	9.3	-9.9	-6.9	7.5
6-करेंसी रीर	8.2	-8.5	-10.4	15.5
6 करेंसी नीर	7.6	-13.2	-11.2	7.5
रुपया/अमरीकी डॉलर	12.5	-12.4	-21.5*	12.9*

नीर : सांकेतिक प्रभावी विनिमय दर

रीर : वास्तविक प्रभावी विनिमय दर

* : अंत-मार्च तक

टिप्पणी : 1. 2008-09 और बाद के आँकड़े अर्न्ततम हैं।

2. सूचकांकों में बढ़ोतरी मूल्य वृद्धि की ओर संकेत करते हैं और गिरावट मूल्यहास की ओर संकेत करते हैं।

डॉलर के स्तर पर पहुँच गयीं (सारणी III.10 और चार्ट III.6)। वर्ष के दौरान विदेशी मुद्रा आस्तियाँ (एफसीए) 13.3 बिलियन अमरीकी डॉलर तक बढ़ गयीं। इसके अलावा, विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधि प्रबंध परिचालनों के

भाग के रूप में रिज़र्व बैंक ने 3 नवंबर 2009 को आइएमएफ से 200 मेट्रिक टन सोना खरीदा। तथापि, इस लेन देन से विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियाँ अप्रभावित रहीं, क्योंकि यह केवल विदेशी मुद्रा आस्तियों को स्वर्ण द्वारा प्रतिस्थापित किये जाने को प्रतिबिंबित करता था। आइएमएफ ने भारत को एसडीआर का आबंटन दो लघु किस्तों में किया, यथा, एसडीआर 3,082 मिलियन (4.82 बिलियन अमरीकी डॉलर के बराबर) का सामान्य आबंटन 26 अगस्त 2009 को और एसडीआर 214.6 मिलियन (0.34 बिलियन अमरीकी डॉलर के बराबर) का विशेष आबंटन 9 सितंबर 2009 को किया। 9 अप्रैल 2010 को विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियाँ 280.0 बिलियन अमरीकी डॉलर थीं।

बाह्य ऋण

III.24 अंत-दिसंबर 2009 में 251.4 बिलियन अमरीकी डॉलर पर भारत के बाह्य ऋण स्टॉक ने अंत-मार्च 2009 के स्तर से 26.8 बिलियन अमरीकी डॉलर

सारणी III.10: विदेशी मुद्रा भंडार

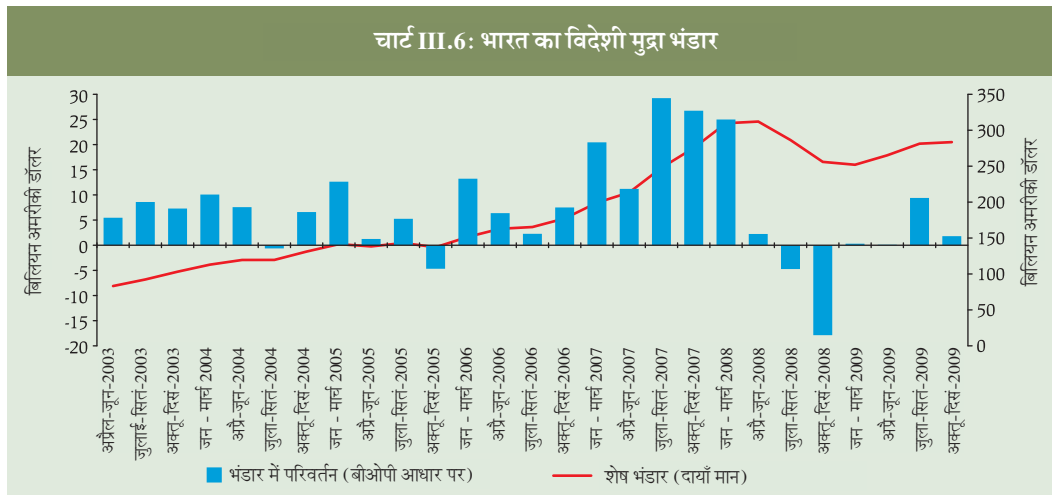
(मिलियन अम. डॉलर)

माह के अंत में	स्वर्ण	एसडीआर@	विदेशी मुद्रा आस्तियाँ*	अंशुको में रिज़र्व की स्थिति	कुल (2+3+4+5)	ज़ापन: माह के अंत में रिज़र्व बैंक द्वारा अमरीकी डॉलर की निवल फॉरवर्ड बिक्री (-) / खरीदी (+) का शेष
1	2	3	4	5	6	7
मार्च 2000	2,974	4	35,058	658	38,694	(-) 675
मार्च 2009	9,577	1	241,426	981	251,985	(-) 2,042
जून 2009	9,800	1	254,093	1,248	265,142	(+) 745
सितंबर 2009	10,316	5,224	264,373	1,365	281,278	(+) 539
दिसंबर 2009	18,292	5,169	258,583	1,426	283,470	(+) 525
जनवरी 2010	18,056	5,124	256,362	1,413	280,955	(+) 525
फरवरी 2010	17,920	5,053	253,991	1,393	278,357	(+) 525
मार्च 2010	17,986	5,006	254,685	1,380	279,057	-
अप्रैल 2010 ##	17,986	5,000	255,663	1,379	280,028	-

* : 20 मार्च 2009 से आइएमएफसी (यूके) द्वारा जारी विदेशी मुद्रा में मूल्यवर्गित 250 मिलियन अमरीकी डॉलर निवेश को छोड़कर।

@ : आइएमएफ द्वारा 28 अगस्त 2009 तथा 9 सितंबर 2009 को क्रमशः सामान्य आबंटन के अंतर्गत आबंटित 3,082.5 मिलियन एसडीआर तथा विशेष आबंटन के अंतर्गत आबंटित 214.6 एसडीआर शामिल हैं।

: 9 अप्रैल 2010 को - : उपलब्ध नहीं।



की वृद्धि दर्ज की, जिसका मुख्य कारण था दीर्घावधि ऋण में बढ़ोतरी होना (सारणी III.11)। दीर्घावधि और अल्पावधि ऋण, दोनों में अंत-मार्च 2009 के

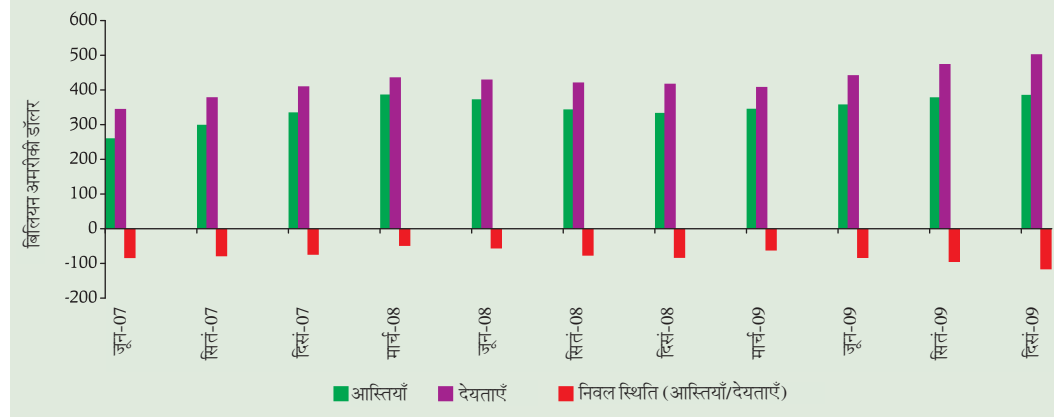
स्तर से अंत-दिसंबर 2009 में वृद्धि हुई। अंत-दिसंबर 2009 में भारत के बाह्य ऋण में हुई कुल वृद्धि में मूल्यन प्रभाव प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुद्राओं के विरुद्ध

सारणी III.11: भारत का बाह्य ऋण
(बिलियन अमरीकी डॉलर)

मद	मार्च 2008 के अंत में	मार्च 2009 के अंत में	सितंबर 2009 के अंत में	दिसंबर 2009 के अंत में	घट-बढ़ (मार्च 2009 की तुलना में दिसंबर 2009)	
					राशि	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7
1. बहुपक्षीय	39.5	39.5	42.4	42.7	3.2	8.1
2. द्विपक्षीय	19.7	20.6	22.1	22.3	1.7	8.4
3. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष*	1.1	1.0	6.3	6.2	5.2	512.7
4. व्यापार ऋण (1 वर्ष से अधिक)	10.3	14.5	15.4	15.7	1.2	8.2
5. बाह्य वाणिज्यिक उधार	62.3	62.4	66.6	70.0	7.5	12.1
6. अनिवासी भारतीय जमाराशि	43.7	41.6	46.0	47.5	5.9	14.3
7. रुपया ऋण	2.0	1.5	1.6	1.6	0.1	7.9
8. दीर्घावधि (1 से 7)	178.7	181.2	200.3	206.2	25.0	13.8
9. अल्पावधि	45.7	43.4	42.4	45.2	1.9	4.3
कुल (8+9)	224.4	224.6	242.7	251.4	26.8	11.9
ज्ञापन: (प्रतिशत)						
कुल ऋण/ जैडोपी	19.0	21.5	-	-	-	-
अल्पावधि ऋण/ कुल ऋण	20.4	19.3	17.5	18.0	-	-
अल्पावधि ऋण/ रिजर्व	14.8	17.2	15.1	15.7	-	-
रियायती ऋण / कुल ऋण	19.7	18.7	18.4	17.7	-	-
रिजर्व/ कुल ऋण	138.0	112.1	115.9	112.8	-	-
ऋण चुकौती अनुपात	4.7	4.4	4.9	5.1	-	-

* : आइएमएफ द्वारा 28 अगस्त 2009 तथा 9 सितंबर 2009 को किया गया आबंटन शामिल है।

चार्ट III.7: भारत की अंतरराष्ट्रीय निवेश स्थिति



अमरीकी डॉलर के अवमूल्यन के कारण 36.9 प्रतिशत के लिए जिम्मेवार था।

III.25 कुल ऋण में अल्पावधि ऋण का अनुपात अंत-मार्च 2009 के स्तर से अंत-दिसंबर 2009 में घट गया। इसी प्रकार, विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियों में अल्पावधि ऋण का अनुपात इस अवधि में थोड़ा कम हुआ। मुद्रा संरचना के संदर्भ में अमरीकी डॉलर में मूल्यवर्गित ऋण अंत-दिसंबर 2009 में कुल बाह्य ऋण के प्रमुख हिस्से के लिए जिम्मेवार था।

अंतरराष्ट्रीय निवेश की स्थिति

III.26 भारत की निवल अंतरराष्ट्रीय देयताएँ अंत-दिसंबर 2009 में 117.1 बिलियन अमरीकी डॉलर थीं, जबकि अंत-सितंबर 2009 में वे 96.0 बिलियन अमरीकी डॉलर थीं। अंतरराष्ट्रीय आस्तियाँ अंत-सितंबर 2009 के 378.9 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़ कर अंत-दिसंबर 2009 में 385.9 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गयीं, जिसका मुख्य कारण था विदेश में प्रत्यक्ष निवेश, प्रारक्षित आस्तियों और अन्य निवेश का तिमाही के दौरान बढ़ना। इसी अवधि के दौरान अंतरराष्ट्रीय देयताओं का 474.8 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़

कर 503.0 बिलियन अमरीकी डॉलर हो जाना आवक प्रत्यक्ष निवेश और संविभाग इक्विटी निवेश में वृद्धि के कारण हुआ (चार्ट III.7)।

III.27 इस प्रकार, भारत के बाह्य क्षेत्र में सुधार विश्व अर्थव्यवस्था में सुधार और आगे वैश्विक वित्तीय स्थितियों के स्थिरीकरण के साथ-साथ हुआ। यह निर्यात में बदलाव और पूँजी अंतर्वाह में निरंतर आधिक्य में प्रतिबिंबित हुआ। वर्ष 2009-10 के दौरान उच्च स्तर पर पूँजी अंतर्वाह होने के बावजूद, जो अर्थव्यवस्था की समुन्नत अवशोषक क्षमता को प्रतिबिंबित करता था, पूँजी अंतर्वाह ने अधिकांशतः उच्चतर चालू खाता घाटा का वित्तपोषण किया। सहज वैश्विक चलनिधि स्थितियों और ब्याज दर एवं वृद्धि विभेदक, दोनों के भारत के पक्ष में रहने को प्रतिबिंबित करते हुए यह उम्मीद है कि पूँजी अंतर्वाह सुदृढ़ रहेगा, जिससे आस्ति कीमतों और विनिमय दरों पर दबाव पड़ सकता है। विश्व पण्य कीमतों की प्रवृत्तियाँ, खास कर तेल की कीमतों का दृढ़ होना, उच्चतर आयात के माध्यम से भुगतान संतुलन पर दबाव डाल सकती हैं। भुगतान संतुलन के विविध खातों के माध्यम से प्रसरणशील बाह्य आघातों के संबंध में कार्रवाई करने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि हमारे पास पर्याप्त विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियाँ हों।